5 अगस्त के मायने !

-शीबा असलम फ़हमी

बीसवीं सदी में जब मंदिर-प्रवेश-निषेध कर दलित समाज के प्रति हो रहे ज़ुल्म और तिरस्कार के सवाल पर डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर से पूछा गया की दलित समाज के लोगों को मंदिर में दाख़िला नहीं मिलता, जबकि उनका दान ले लिया जाता है, ऐसे में दलितों के साथ नाइंसाफी होती है, तब डॉ अम्बेडकर ने कहा था की हिन्दू समाज अपने ही समाज के एक बड़े वर्ग के साथ पूजा उपासना में जो जातिगत भेदभाव करता है ये उसका नैतिक पतन और क्राइसिस है. मेरा ध्येय शूद्रों को मंदिर के अंदर पहुँचाना नहीं है, बल्कि मेरा लक्ष्य है की मेरे समाज के लोग स्कूल, यूनिवर्सिटी और तंत्र के संस्थानों में पहुंचें। गैर बराबरी, नाइंसाफी, ज़ुल्म और तिरस्कार जिनका आचरण है वो खुद अपने नैतिक उत्थान के लिए अपने अंदर सुधार लाएं और खुद को एक मानवतावादी, आदर्श समाज साबित करें.

बात बिलकुल साफ़ है, आज की दुनिया मध्ययुगीन दुनिया नहीं है जहाँ डंडे के ज़ोर से समाज चलता था. इन्साफ, आज़ादी, बराबरी ये तीन ऐसे मूल्य हैं जिन्हे ठुकरा कर कोई भी समाज खुद को सभ्य नहीं कहला सकता।1992 में जब बाबरी मस्जिद को तोडा गया तब भी दुनिया ने उसे एक अपराध ही माना था, आज 2020 में इस्तांबुल के हाया-सोफिया जो कभी पागान मंदिर, फिर चर्च, फिर मस्जिद, फिर म्युज़ियम रहा- को दोबारा मस्जिद में तब्दील करना भी दुनिया को कसैले स्वाद से भर गया. हालाँकि तुर्की के किसी भी ईसाई ने इसका विरोध नहीं किया तब भी ये हरकत बहुसंख्यकों की तंगदिली की मिसाल बनी. सत्ताशाली समाज जब अपने कमज़ोरों के साथ छोटापन करते हैं तो भले ही वो कमज़ोर चूं भी न कर सके, लेकिन दुनिया उस कृत्य को संज्ञान में ज़रूर लेती है. और ऐसे ही बनती है विश्वव्यापी छवि. हिन्दू समाज के बाद तालिबान ने भी एक घटिया मिसाल पेश की थी 2001 में बामियान की प्राचीन बुद्ध प्रतिमाओं को तोड़ कर. लेकिन जब उनका शासन ख़त्म हुआ तो अफ़ग़ानिस्तान की आम जनता, नयी सरकार और विश्व समुदाय ने बामियान-मूर्तियों को दोबारा ठीक करने का काम शुरू भी कर दिया. ज़ाहिर है आधुनिक समय में जब आबादियां एक मुल्क से दुसरे मुल्क में प्रवास कर रही हैं, दुनिया ग्लोबल हो रही है, तब ऐसी बदनामी के साथ कौन जीना चाहेगा?

दुनिया का ऐसा कौन सा कोना है जहाँ भारतीय प्रवासी नहीं बसे हुए हैं? हिन्दुत्वा के उदय से पूर्व उनकी छवि विनम्र, मेहनती, क़ाबिल और शांतिप्रिय समूह के तौर पर होती थी. भारत एक सेक्युलर, डेमोक्रेसी के तौर पर जाना जाता था जहाँ सभी धर्म आराम से रह सकते थे. पड़ोस के मुस्लिम मुल्कों के लिए भारत एक मिसाल था की बहुसंस्कृतियाँ कैसे मिलजुल कर जी सकती हैं. अब उस सौम्य, आधुनिक छवि से पीछा छुड़ा चुकने के बाद प्रवासियों को भी चिंता होने लगी है क्यूंकि कनाडा, संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, कुवैत, अमेरिका, जैसे देशो में आधिकारिक तौर पर भारत में चल रहे मुस्लिम-विरोधी घटनाक्रम की आंच उन प्रवासियों पर भी पड़ने लगी है.

5 अगस्त की शाम एक चैनल पे चल रहे पैनल डिस्कशन में एंकर ने मुझसे सवाल किया कि भारत देश की छवि एक ऐसे देश की 'बनाई जा रही है' जहाँ अल्पसंख्यक मुस्लिम समाज के साथ भेदभाव और ज़ुल्म हो रहा है, जिस तरह से चीन में उइघीर और दूसरी जगह हो रहा है, इसको कैसे ठीक किया जाये? इस सवाल पर मुझे ताज्जुब हुआ की एक भारतीय मुस्लिम के तौर पर सैकड़ों लिंचिंग, फेक एनकाउंटर, अन्यायपूर्ण गिरफ्तारियां, फ़र्ज़ी मुक़दमे, टार्गेटेड हिंसा, बलात्कार झेल रहे समाज से ही ये पूछा जाएगा की 'आपको लेकर हमारी छवि जो ख़राब हो रही है दुनिया भर में उसे कैसे ठीक किया जाये?' यानी हिन्दू समाज की छवि विश्व भर में सुन्दर बनी रहे इसका ज़िम्मा भी पीड़ित को ही दिया जा सकता है? ये होती है असली घृष्टता!

306 , Rohit House, Tolstoy Road, New Delhi - 110001
Email: info@impar.in, Contact No: 011-43595456, Fax No: 011-23731130
U74999DL2015NPL281054 | Website: www.impar.in

बहरहाल, अयोध्या में 5 अगस्त 2020 को वही हुआ जो पहले भी हो चुका है- भूमिपूजन! पहले, जब बाबरी मस्जिद की ईमारत मौजूद थी, जब इस मामले में कोई फैसला भी नहीं हुआ था और जब बाबरी मस्जिद के तोड़े जाने पर केंद्र सरकार, राज्य सरकार और तमाम मीडिया इसे शर्मनाक, आपराधिक कृत्य बता रहे थे, और जब मुस्लिम समाज में भी ये उम्मीद थी की खुलेआम देश के संविधान, क़ानून और मिलीजुली संस्कृति पर ऐसा कुठाराघात नहीं किया जाएगा, भूमिपूजन तब भी हुआ था जिसका हल्का-फुल्का विरोध ही हुआ था. 1992 से 2020 तक अनेक छोटे-बड़े आयोजन उस विवादित स्थान पर होते ही रहे हैं. सबको पता था की मंदिर निर्माण अब सिर्फ कुछ समय की बात है. इस बीच 1992 से अब तक अयोध्या में ज़ोर शोर से मंदिर निर्माण से सम्बंधित पत्थर की कटाई, नक्काशी का काम लगातार जारी रहा है, ऐसे में अचानक 5 अगस्त को मीडिया में इस तरह क्यों दर्ज करवाया जाना था?

2019 में सर्वोच्च न्यायलय ने जब फैसला दिया था तब भी आशंका थी की मुस्लिम समाज तीव्र प्रतिक्रिया देगा, पर नहीं, सब शांत रहे और ज़्यादातर ने फैसले को सार्वजानिक तौर पर स्वीकार किया. (बल्कि अंदरूनी तौर पर ये आमराय बन गयी थी की अगर फैसला मुस्लिम पक्ष में आया तो भी बतौर सद्भावना ये ज़मीन राम मंदिर निर्माण के लिए दे दी जानी चाहिए), सैकड़ों लिंचिंग और हमलों के बाद भी मुस्लिम समाज ने प्रतिक्रिया स्वरुप कभी किसी से बदला लेने की कोई कार्यवाही नहीं की, तमाम फ़र्ज़ी एनकाउंटर, मुक़दमे, गिरफ्तारियों के बावजूद कभी किसी हिन्दू भाई को प्रतिशोध में निशाना नहीं बनाया. मीडिया पिछले 6-7 साल से हद दर्जे की बदतमीज़ी करता है दाढ़ी-टोपी वाले पैनेलिस्ट से, तब भी मुस्लमान उस पिटे हुए प्यादे को ही समझते हैं की मत जाओ, लेकिन मीडिया पर निशाना नहीं साधते. मुस्लिम समाज के उत्थान के सवाल पर भी हमेशा भारत के मुसलमानो ने बेहतर स्कूली शिक्षा और रोज़गार ही माँगा है. इसलिए वो सभी पक्ष जो 5 अगस्त 2020 को भारत के मुसलमानो को औक़ात दिखाने का अवसर मान रहे हैं, आज नहीं तो कल जवाब उन्हें ही देना है. पीड़ित पक्ष की ज़िम्मेदारी नहीं होती की वो आततायी की नैतिकता की रक्षा करे, उसकी छवि को उजला बनाए और उसे अपराधबोध से बचाये.

डॉ भीमराव अम्बेडकर ने ऐसे में जो युक्ति अपनाई, जाने-अनजाने मुस्लमान उसी पर अमल कर रहा है.

Sheeba Aslam

IMPAR Steering Committee Member